श्रेष्ठ समाज का पुनर्निर्माण

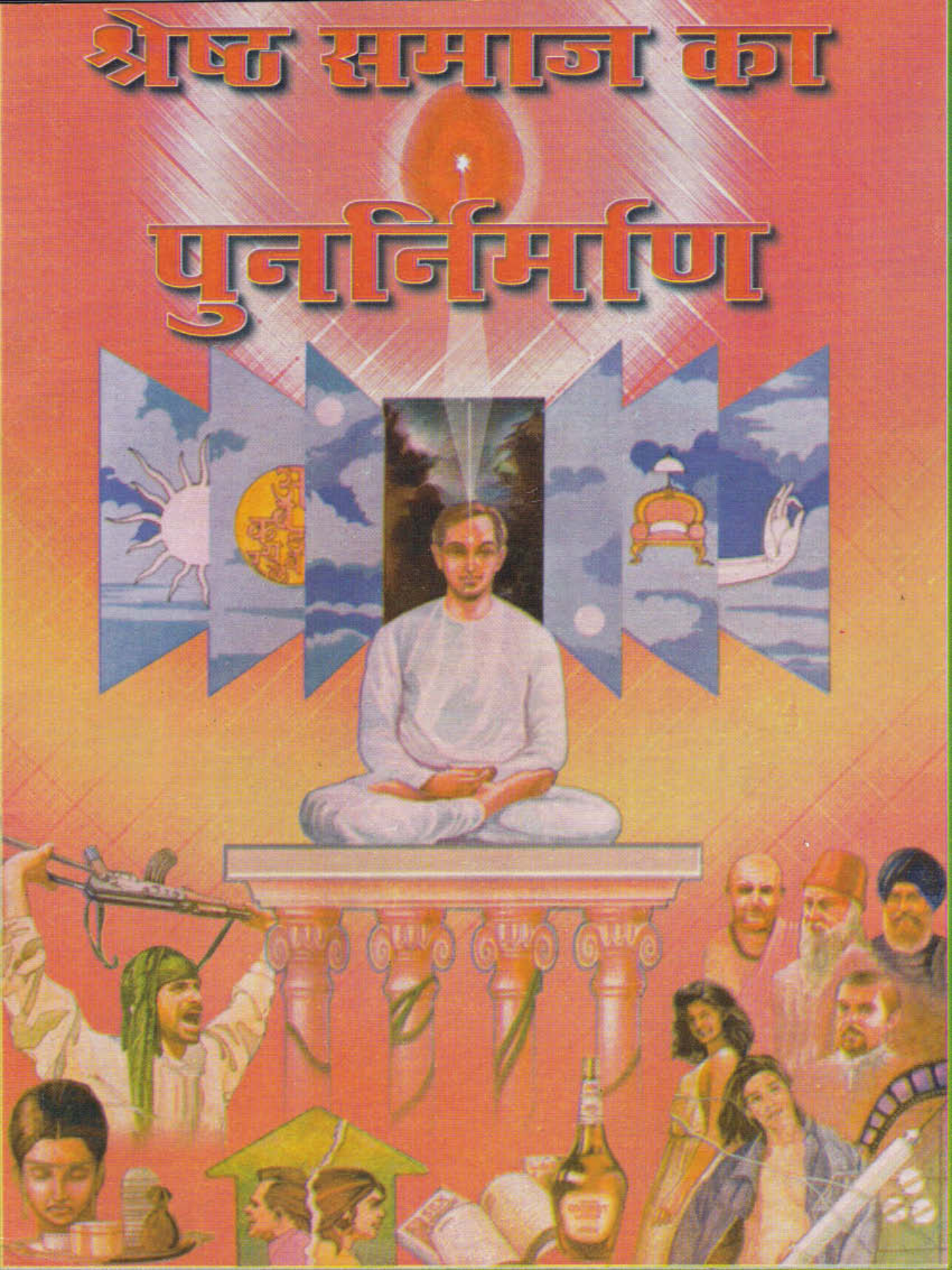

संदेश

भारतीय वाङ्मय सेवा और परोपकार को सर्वोत्तम धर्म मानते हैं। दूसरों का भला करना ही महान पुण्य है और इसके विपरीत किसी के मन को दु:खाना पाप की श्रेणी में आता है। आत्मा को परमप्रिय परमात्मा से जोड़ना, सबको सुख-शान्ति का मार्ग दिखाना, पापों से छुड़ाकर पुण्य का रास्ता दिखाना एवं इंसान में इंसानियत भरना ही महानतम् सेवा है। आधुनिक अर्थ-प्रधान व्यवस्था एवं भौतिकवादी जगत की मरुभूमि में सेवा, परोपकार, पुण्य, साधना एवं दया-क्षमा अथवा करुणा की शीतल छाया प्रदान करने वाले वृक्ष तो प्राय: लुप्त ही हैं। स्वार्थ की आँधी ने सेवा की भावना को अस्त-व्यस्त कर दिया है।

नयी सहस्त्राब्दी में अनेकों चुनौतियों के बावजूद हमें आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए निर्मल-निस्वार्थ सेवा भावना की कलम लगानी है ताकि भावी पीढ़ी व हमारा भविष्य नयी सुबह का सूरज देख सके। सम्भवत: यही सबसे अच्छी समाज-सेवा होगी और यही समय की पुकार भी है।

अनेकों आध्यात्मिक एवं समाज सेवी विभूतियों ने समय-समय पर अपने निजी हितों की बलि देकर सामाजिक उत्थान के कार्य किये। ऐसे अनेकों उदाहरणों से इतिहास के पृष्ठ रंगे हुए हैं किन्तु आज उनके अधूरे स्वप्नों को साकार करने एवं मानव-अस्तित्व के लिए आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु सामूहिक प्रयत्न एवं जन-चेतना की आवश्यकता है। इस दिशा में 'हम बदलेंगे, जग बदलेगा' की समवेत लहरियाँ उठनी चाहिएँ।

आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए राजयोग सही व सक्षम साधन है। मुझे प्रसन्नता है कि राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के समाज-सेवा प्रभाग ने इसमें सक्रिय भूमिका निभाई है। हम समस्त विश्व-निवासियों तथा विशेषकर समाज-सेवा से जुड़े हुए व्यक्तियों का विनम्र आह्वान करते हैं कि आइए, समय के संकेत समझकर सभी स्वयं को दैवी गुणों से सम्पन्न करते हुए ऐसे सामाजिक परिवेष की रचना करें जिससे श्रेष्ठ समाज बनाने और रामराज्य की कल्पना को मूर्त रूप देने में मदद मिल सके।

दादी प्रकाशमणि

मुख्य प्रशासिका

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ।

प्रस्तावना

श्रेष्ठ समाज सेवा, समाज सेवक और सुखी समाज

प्रस्तुत चित्रावली और व्याख्या-माला में समाज सेवा और समाज सेवक के विषय में कुछेक महत्त्वपूर्ण बातों को दर्शाया गया है । इसमें आज के मानव की मनोस्थिति, घर-परिवार और समाज की दशा तथा देश-विदेश की हालत का भी चित्रण किया गया है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि आज के सन्दर्भ में क्या समाज सेवा होनी चाहिए । साथ-साथ यह भी बताया गया है कि समाज के गठन का हेतु क्या है और एक श्रेष्ठ समाज की रूपरेखा क्या हो । आज एक स्वच्छ, स्वस्थ और सुखद समाज का नक्शा सामने न होने के कारण समाज-सेवक उस दिशा की ओर आगे बढ़ने का यत्न नहीं कर सकते बल्कि वे आज की कुछ समस्याओं को लेकर उन्हें ही सुलझाने में लगे हुए हैं । पत्ते-पत्ते को पानी देने से वृक्ष कब तक हरा भरा रहेगा ? रोग के चिन्हों को हटाने का पुरुषार्थ करने से रोग कैसे समाप्त हो जाएगा ? रोग का निवारण तो उसके मूल कारण को निर्मूल करने से होगा। परन्तु खेद है कि आज रोग के मूल कारण की ओर कम ध्यान है और उस का मूलोच्छेदन करने की सेवा कम है ।

प्रस्तुत चित्र-संग्रह में यथा-स्थान यह भी बताया गया है कि समाज की प्रायः सभी समस्याओं की उत्पत्ति नैतिक मूल्यों के ह्रास के परिणामस्वरूप हुई है । आज जो मानसिक तनाव है, उस के कारण जो कई रोग हैं, लड़ाई-झगड़े और कलह-क्लेश हैं, या जो हिंसा की वारदातें हैं, वे मन को आनन्द एवं शान्ति के स्रोत परमात्मा से जोड़ने ही से निवारण हो सकते हैं । ऐसा योगाभ्यास ज़रूरी है । अतः समाज सेवक को इन अमोघ उपायों का प्रयोग करना चाहिए । इस संदर्भ में कुछेक धर्म-स्थापकों या महान व्यक्तियों का भी उल्लेख किया गया है जिन्होंने नैतिक स्तर पर समाज सेवा की । आशा है कि पाठकवृन्द इस चित्रावली से सेवा की एक नई दिशा में अग्रसर होंगे और इस से स्वयं भी लाभान्वित होंगे तथा इसकी प्रतियों की भेंट अन्यान्य को भी देंगे ।

ईश्वरीय सेवा में,

ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र
19/17, शक्ति नगर, दिल्ली – 110007

नव समाज का दिग्दर्शन

वर्तमान समय चारों ओर व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन तथा सामाजिक जीवन में कष्ट बढ़ रहे हैं । आशंका तथा भय के बादल मंडरा रहे हैं । नित्य नई-नई समस्याएं पैदा हो रही हैं । आपसी मन- मुटाव और संघर्ष बढ़ते जा रहे हैं । मानसिक तनाव के प्रकोप से बाल, युवा और वृद्ध कोई भी अछूता नहीं रहा है।

भौतिकता का बोलबाला है । सम्बन्धों में स्वार्थ की प्रधानता होती जा रही है । नैतिक, मानवीय एवं सामाजिक मूल्य प्रायः लुप्त होते जाते हैं । पाशविक तथा आसुरी प्रवृत्तियां उत्कर्ष पर हैं । आतंकवाद, विघटनात्मक दृष्टिकोण एवं हिंसात्मक वृत्तियां पनप रही हैं सरकारी तन्त्र अपनी समूची शक्ति का प्रयोग इन्हीं वृत्तियों से झूझने में कर रहे हैं । अर्थ व्यवस्था डावांडोल हो रही है । व्यक्ति का जीवन खोखला होता जाता है । आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती है।

ऐसे दूषित वातावरण में, हर गांव, नगर, प्रदेश और देश, धर्म और जाति के प्रत्येक, नर-नारी, बच्चे, और वृद्ध व्यक्ति के मन में परिवर्तन की अभिलाषा है । हरेक चाहता है कि एक ऐसा दिव्य परिवर्तन आए, एक ऐसा श्रेष्ठ समाज बने जहां मानसिक शान्ति, सम्पूर्ण सुख समृद्धि,और धर्मपरायण एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यवहार हो, सर्वगुणों एवं शक्तियों से सम्पन्न अलौकिक जीवन हो तथा पर्यावरण एवं प्रकृति हर प्रकार से सुखद एवं मंगलमय हो ।

आज हर देहधारी मानव को ऐसे श्रेष्ठाचारी सतयुगी समाज को पुनः साक्षात् देखने की इच्छा है जैसा कि वह 5000 वर्ष पूर्व अर्थात् विश्व के आदिकाल में था जब सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन के साथ-साथ पशुओं और पक्षियों का जीवन भी हर प्रकार के कष्टों से मुक्त तथा सुख और मौज से भरपूर था। उसी दुनिया के बारे में आज भी गायन है कि उसमें शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे।

विश्व में शुभपरिवर्तन की क्रान्ति विज्ञान से नहीं,
उत्तम विचारधारा से आएगी ।

परमपिता शिव परमात्मा

नव समाज का दिग्दर्शन

आदर्श समाज

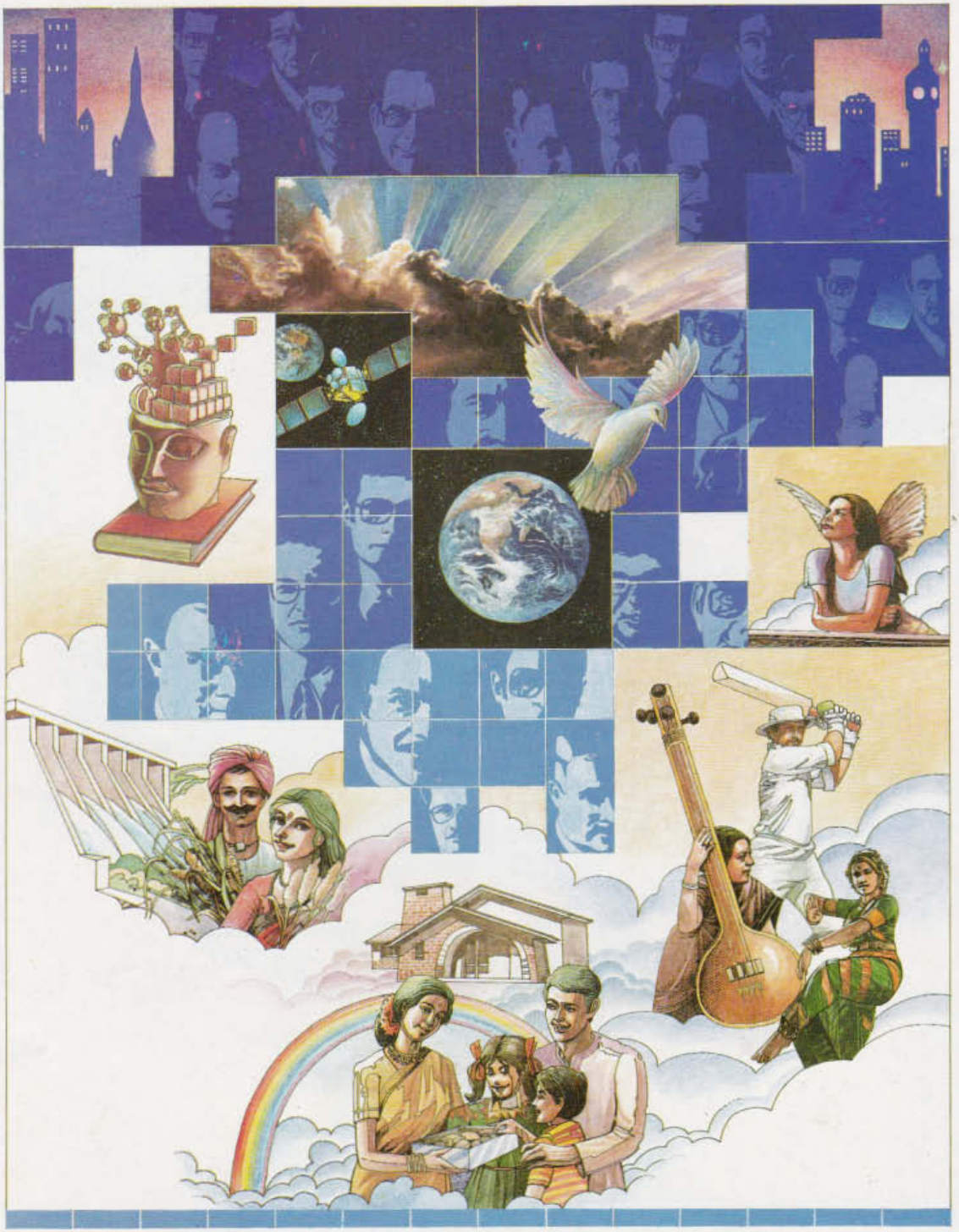

आदर्श समाज

समाज, उस व्यवस्था का नाम है जिसमें लोग प्रशासन, अनुशासन और संयम से रहते हुए निर्भय, स्वस्थ, सुखी और परस्पर सहयोगी होते हैं । एक अच्छे समाज में पारिवारिक तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं की दृष्टि से भी मानव जीवन सम्पन्न होता है। उसमें बौद्धिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक, हर प्रकार से अर्थात् सर्वांगीण रूप से, विकास अपने शिखर पर होता है ।

एक आदर्श समाज में, पारिवारिक जीवन में सम्पूर्ण सुख-समृद्धि तथा व्यक्तिगत जीवन में निश्चिन्तता होती है अर्थात् किसी भी प्राप्ति के छिन जाने का भय नहीं होता है ऐसे समाज के बारे में कहा गया है -- दैहिक, दैविक, भौतिक, तापा । राम राज्य काहू नहीं व्यापा ।

ऐसे समाज में, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के साथ-साथ सर्व कलाओं का उत्कर्ष भी चारों ओर दिखाई देता है। प्रत्येक नर श्रीनारायण का स्वरूप और प्रत्येक नारी श्रीलक्ष्मी स्वरूपा होती है तथा हर बाल, युवा एवं वृद्ध के जीवन में समरसता एवं आनन्द-ही-आनन्द होता है।

एक आदर्श समाज में, मानव जीवन तो क्या पाश्विक योनियों में भी वैर, द्वेष का नामोनिशान नहीं होता। प्रकृति के तत्व भी सतोप्रधान अवस्था में होने के कारण मानव मात्र के सदा सहयोगी रहते हैं। न बाढ़ का भय होता है न भूकम्प का डर। मौसम सदाबहार, चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली होती है।

रोग और शोक से मुक्त सभी नर-नारी दीर्घायु व्यतीत करते अपने नश्वर शरीर को ऐसे छोड़ते हैं मानो पुराने वस्त्र के स्थान पर नया वस्त्र धारण कर रहे हों । जन्म लेते, जीवन व्यतीत करते तथा शरीर छोड़ते समय किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता । इसे ही भारत का स्वर्णिम काल अथवा सतयुगी सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोतम, अहिंसा-पूर्ण श्रेष्ठाचारी समाज कहा जाता है ।

दूसरों को खुशी देना सबसे बड़ा उपहार है ।
मुख से मीठे बोल बोलने वाला ही सबका प्रिय बन जाता है ।

आज का समाज

आज समाज के हर व्यक्ति के मन को, चाहे वह छोटा है या बड़ा, राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है या साधारण, पांच विकारों रूपी माया ने अपने अधिकार में कर लिया है । व्यक्ति का मन, मस्तिष्क और बुद्धि इसके वश में है । इसके कारण मानव अनेकानेक दुष्कर्म कर रहा है । इसलिए आज समाज में चारों ओर पाप और अत्याचार फैल रहे हैं । असुरक्षा की भावना सारे विश्व में बढ़ रही है । घृणा और क्रोध के वशीभूत एक देश दूसरे देश पर आक्रमण कर देता है । मिसाईल एवं परमाणु बम ने वातावरण को भयावह बना दिया है ।

लोभ के अधीन होकर आज का परिवार नववधु को जीवघात करने पर मजबूर कर देता है । आपसी मतभेद के कारण परिवार टूट रहे हैं और पारिवारिक समस्याएं दिनोंदिन बढ़ रही हैं । सम्बन्धों में स्वार्थ का बोलबाला है । भाई-भतीजावाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है । हरेक का दृष्टिकोण संकुचित होता जाता है ।

पर्यावरण के प्रदूषण तथा असन्तुलन के परिणाम स्वरूप कहीं पर सूखा है तो कहीं पर बाढ़ का प्रकोप है । राष्ट्रीय हित की अवहेलना करके व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण बड़े बड़े कारखानों में तालाबन्दी हो जाती है जिससे भुखमरी और बेरोज़गारी बढ़ती जाती है । अमूल्य समय हड़तालों, धरनों और आन्दोलनों के कारण नष्ट हो रहा है ।

प्रभुचिन्तन तथा स्वाध्याय को छोड़ आज का मानव अश्लील साहित्य, नशीले पदार्थों के सेवन और कुव्यसनों में लगा है । वह तनाव और अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए तथा सच्चे सुख और मानसिक शान्ति को ढूंढ रहा है । धर्म भेद, भाषा भेद आदि बढ़ रहे हैं । चारों ओर आतंकवाद एवं हिंसात्मक वृत्तियां बढ़ रही हैं।

टूटे किनारे वाली नदी बाढ़ लाती है ।
अपनी मर्यादाओं में न रहने वाला मनुष्य विध्वंसकारी होता है ।

आज का समाज

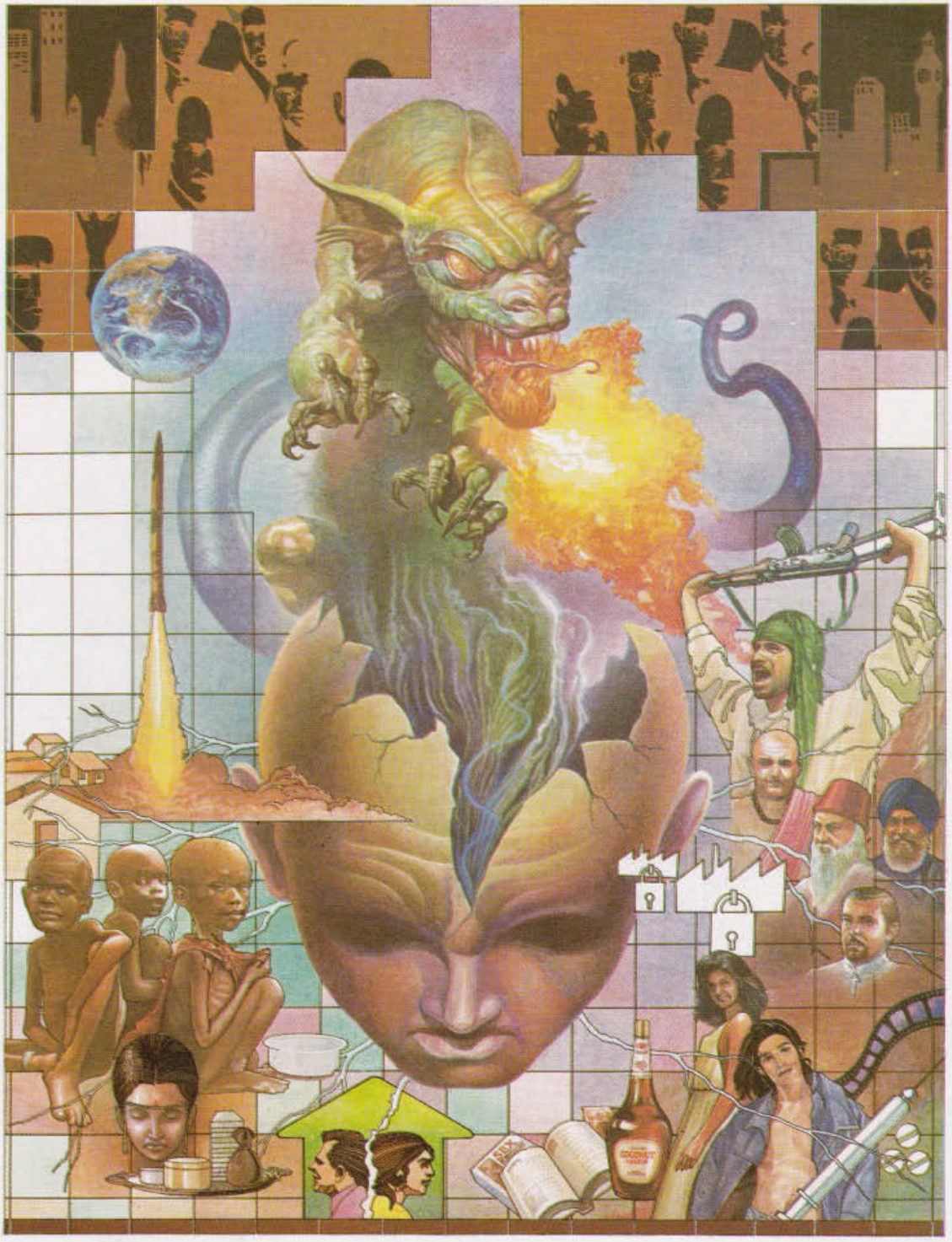

सोशल (SOCIAL) शब्द का अर्थ

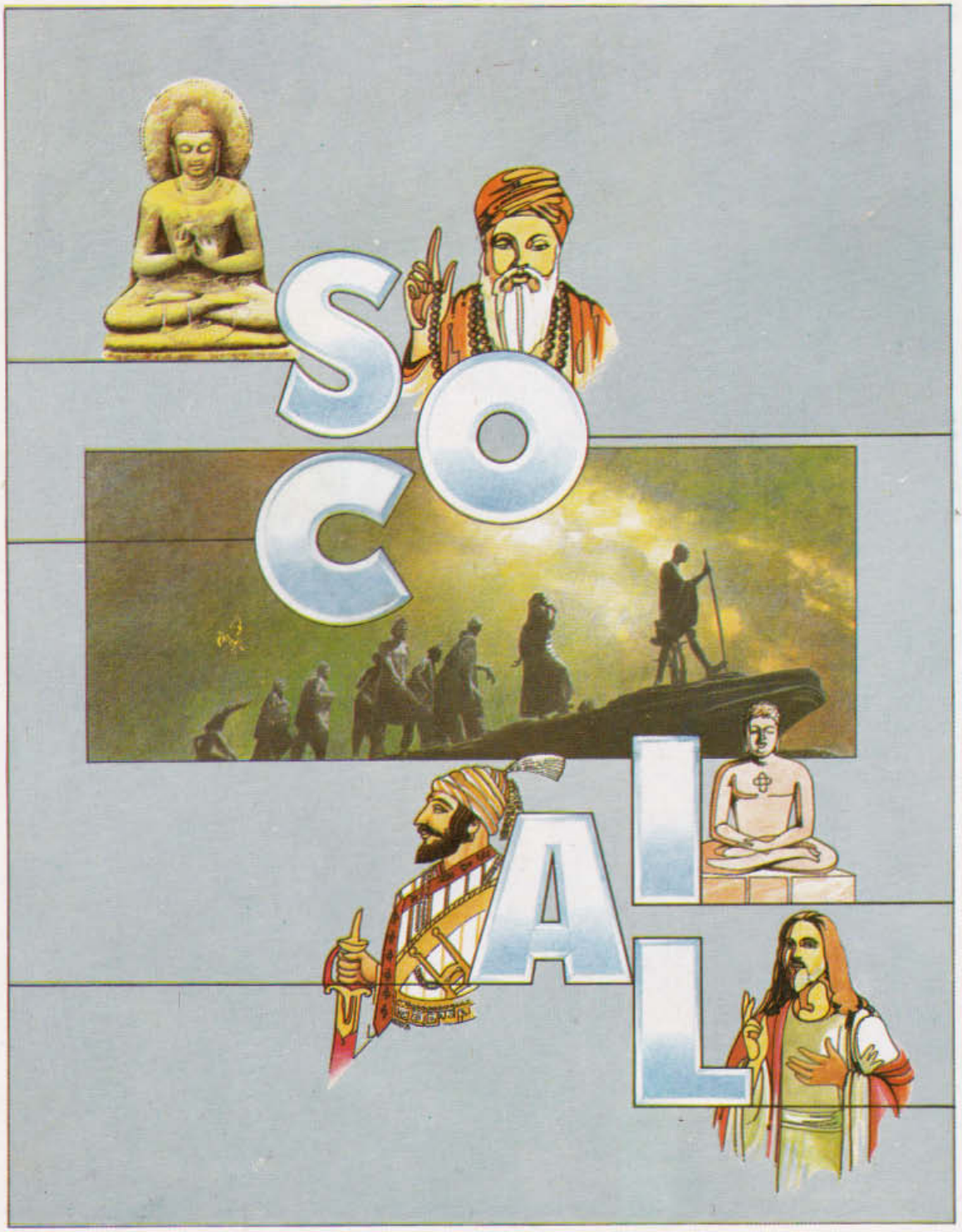

सोशल (SOCIAL) शब्द का अर्थ

SOCIAL शब्द में छः अक्षर हैं । उनमें से हरेक से निम्नलिखित प्रेरणा ले सकते हैं:

S : for Sympathy : करुणा, दया
O : for Oneness : एक में विश्वास
C : for Co-operation : सहयोग
I : for Introversion : अन्तर्मुखता
A : for Alertness : सावधानी
L : for love : स्नेह, प्यार

इस धरा पर अनेक ऐसे समाज सेवक हुए हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व समाज की भलाई के लिए समर्पित कर दिया । उन्होंने सामाजिक हित को व्यक्तिगत और पारिवारिक हितों से ऊपर रखा । चाहे स्वतन्त्रता संग्राम हो या रुढीवाद से तथा सामाजिक कुरीतियों से टकराव, उन्होंने इन सब का दृढ़ता से मुकाबला किया । चाहे इस संघर्ष में उन्हें अपने प्राण भी न्योछावर करने पड़े, परन्तु उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं हटाए। ऐसे सर्वहितकारी समाज सेवक इस धरा पर पैदा हुए हैं, यथा:अहिंसा एवं सहिष्णुता की मूर्ति महात्मा बुद्ध । उन के हृदय में सर्व के प्रति करुणा एवं दया का भाव सदा बना रहा ।

नानकदेव का एक ईश्वर में दृढ़ विश्वास था: `ईश्वर एक है और वह निराकार है, यह सन्देश उन्होंने जन जन तक पहुंचाकर अन्धविश्वास और जातिवाद में भटक रहे मानव को एक नई दिशा देने का पुरुषार्थ किया । महावीर का जीवन अन्तर्मुखी था : `संयम नियम तथा एकाग्रता एवं अन्तर्मुखता के बल पर बुराई पर अच्छाई की जीत सम्भव है`, यह विश्वास उन्होंने पुनः जागृत किया। ईसा मसीह प्रेम के सन्देशवाहक थे : `अपने पड़ोसी से प्यार करो`– यह मुहब्बत का पैग़ाम लेकर वे उस समय इस धरा पर आए जब चारों ओर ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि फैल रही थी । सभी के दिलों में पुनः ईश्वर का विश्वास पैदा करके, उन्हें आपसी भाईचारे का सन्देश दिया । महात्मा गान्धी ने अहिंसापूर्ण संघर्ष की शक्ति का अद्भुत प्रयोग किया। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ है । एकता का नारा बुलन्द करके उन्होंने जन शक्ति को पुनः संगठित किया और एक ऐसी शक्ति को नतमस्तक कराया जिसके लिए गायन था कि उसके साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता ।

छत्रपति शिवाजी जीवन-भर जागरूक रहे । तत्कालीन समाज को गुलामी की जंजीरों से स्वतन्त्र कराने के लिए छत्रपति शिवाजी ने जिस प्रकार शत्रु से लोहा लिया, वैसा अन्य उदाहरण भारत के इतिहास में कहीं नहीं मिलता । जीजा बाई द्वारा बचपन में सुनाई गई वीर गाथाओं को उसके सपूत छत्रपति शिवा जी ने अत्याचार एवं ज़ुल्म के विरुद्ध लड़ कर साकार कर दिखाया ।

आदर्श समाज सेवक

समाज सेवक के व्यक्तित्त्व की समाज के परिवर्तन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है । एक अच्छा समाज सेवक अपनी सूझबूझ एवं दूरदर्शिता द्वारा समाज को उत्थान की ओर अग्रसर करता है । उसका अपना दिव्यगुण सम्पन्न जीवन समाज की नब्ज़ को समझने में तथा उसका मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होता है ।

एक अच्छे समाज सेवक से वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा की जाती है ताकि वह प्रत्येक स्थिति एवं परिस्थिति को ठीक प्रकार से समझ कर उसका समाधान समाज को दे सके । समाज के सम्पूर्ण उत्थान के लिए समाज सेवक की रचनात्मक बुद्धि बहुत ही सहायक सिद्ध होती है ।

समाज सेवक का निष्पक्ष भाव उसे सर्वप्रिय बनाता है । वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति से धर्म, जाति, भाषा, रंग आदि के भेद से ऊपर उठकर एक समान व्यवहार करके उसे अपने समीप लाता है तथा सर्व के सहयोग से समाज को नई दिशा प्रदान करता है ।

यदि समाज सेवक का अपना जीवन लोभ, अंहकार आदि आसुरी वृत्तियों के अधीन हो जाए तो समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है और सामाजिक व्यवस्था अन्धकार रूपी गर्त की ओर बढ़ने लगती है । ऐसी परिस्थितियों में समाज सेवक केवल नाम, मान, शान के लिए अथवा बाहरी दिखावे के अधीन होकर समाज सेवा का प्रदर्शन मात्र करता है। इससे न तो समाज का कुछ भला होता है और न ही समाज सेवक को आन्तरिक खुशी प्राप्त होती है । अतः यह बहुत ही आवश्यक है कि समाज सेवा की ओर अपना कदम बढ़ाने से पहले समाज सेवक अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य को अच्छी तरह से निर्धारित कर ले ।

परिस्थितियों में अपने पथ से विचलित न होना ही
वीर पुरुष का लक्षण है ।

आदर्श समाज सेवक

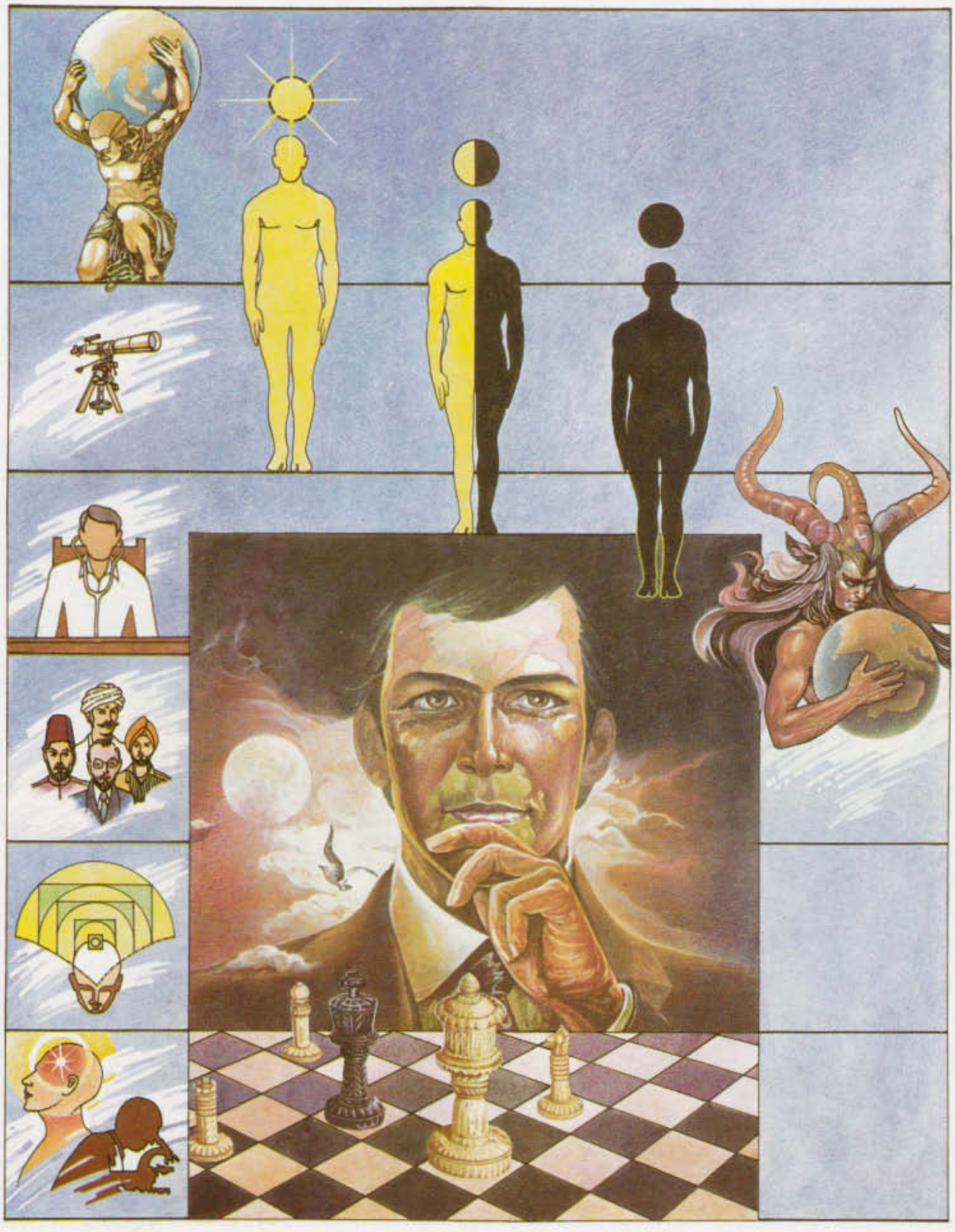

सहयोग से सुखमय समाज

सहयोग से सुखमय समाज

समाज में मुख्य तीन सत्ताएँ हैं – वैज्ञानिक सत्ता, राजनीतिक सत्ता तथा धार्मिक सत्ता। विज्ञान नए-नए आविष्कार करके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के लिए साधनों का निर्माण करके, उसे भौतिक समृद्धि प्रदान करने का प्रयास करता है परन्तु इसके द्वारा आण्विक शस्त्रों के निर्माण से मानव जाति में भय और चिन्ता व्याप्त है। आण्विक शस्त्रों का प्रयोग सम्पूर्ण मानव जाति को नष्ट कर सकता है।

एक अच्छी राजनीतिक सत्ता समाज में सुचारू प्रशासन व्यवस्था को स्थापित करती है । राज्य प्रणाली में समय–समय पर आवश्यक परिवर्तन होते रहते हैं । वर्तमान प्रजातन्त्र व्यवस्था में नैतिक मूल्यों के ह्रास ने स्वार्थपूर्ति के लिए असामाजिक तत्वों को जन्म दिया है । अव्यवस्था, असुरक्षा तथा अशान्ति बढ़ रही है । अपने राज्य को बढ़ाने के लिए सीमाओं का उल्लंघन होता रहता है । एक देश दूसरे को अपने अधीन करके गौरवान्वित महसूस करता है । भ्रष्टाचार और कुशासन का बोलबाला है ।

धार्मिक सत्ता को व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में मूल्यों को बनाए रखने में मार्ग दर्शक का कार्य करना चाहिए । उसे राजनीतिक सत्ता तथा वैज्ञानिक सत्ता को अपनी सीमाओं में कार्य करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश देना चाहिए । धर्म की सत्ता को सर्वोच्च माना जाता है । धर्म को `घोड़ा` और कर्म को `गाड़ी` की संज्ञा दी गई है परन्तु वर्तमान समय धर्म रूपी घोड़ा गाड़ी के पीछे चलने को मजबूर है । इसलिए अन्य दोनों सत्ताएं निरंकुश होकर सामाजिक व्यवस्था को पथ–भ्रष्ट कर रही हैं ।

स्वर्णिम समाज के पुनर्निर्माण के लिए तीनों सत्ताओं को एक-दूसरे के समीप आना होगा । आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए वैज्ञानिक सत्ता प्राणीमात्र की भलाई के लिए नए आविष्कार करे, राज्य सत्ता सादगी, संयम एवं अनुशासन की पहले स्वयं उदाहरण बने और धार्मिक सत्ता आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा आसुरी शक्तियों पर अंकुश लगाए । तीनों सत्ताओं के आपसी सहयोग से सुखमय समाज का निर्माण सम्भव है ।

दूसरों से आदर प्राप्त करने की पहली आवश्यकता यह है
आप दूसरों को आदर दें ।

आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्निर्माण

आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्निर्माण

प्रत्येक संगठन के उज्ज्वल भविष्य का आधार उसका सुयोग्य नेता है । एक अच्छे नेता की विशेषता उसका दिव्य चरित्र एवं व्यवहार–कुशलता है। यदि वह स्वयं अनुशासित है अर्थात् उसकी सूक्ष्म शक्तियां—मन, बुद्धि और संस्कार उसके नियन्त्रण में हैं तो अवश्य ही वह अपने संगठन को भी मर्यादित एवं निष्ठावान बना सकता है ।

`मन` अर्थात् संकल्प शक्ति, `बुद्धि` अर्थात निर्णय शक्ति और `संस्कार` अर्थात स्मृति शक्ति – ये तीनों शक्तियां आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां हैं । जैसे एक रथवान अपने रथ के घोड़ों को अपने बाहूबल द्वारा नियन्त्रित करता है, वैसे ही आत्मा अपनी इन तीनों शक्तियों को आध्यात्मिक बल के द्वारा नियन्त्रित करती है ।

यदि आत्मा में आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है तो वह अपने मन, बुद्धि, संस्कार तथा अपनी सर्व ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का ठीक मार्गदर्शन नहीं कर सकती । ऐसी स्थिति में उसके कर्म अमर्यादित एवं निकृष्ट ही होंगे जिससे समाज में पाप और अत्याचार बढ़ता है, तथा सम्बन्धों में स्वार्थ, साहित्य में अश्लीलता और धर्म के नाम पर अधर्म पनपने लगता है । आसुरी वृत्तियों के अधीन मानवीय जीवन नरकमय बन जाता है ।

इसलिए समाज को पुन: श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की परम आवश्यकता है। स्वयं की सत्य पहचान, अर्थात् ''मैं ज्योति-स्वरूप अविनाशी चेतन आत्मा हूँ, शान्ति मेरा स्व-धर्म है। पाँच तत्वों से पार ब्रह्मलोक मेरा निज धाम है। ज्योति-स्वरूप परमात्मा शिव मेरे रूहानी पिता हैं। मैं उनकी अमर सन्तान हूँ। इस सृष्टि पर श्रेष्ठ कर्म करने के लिए आया हूँ।'' यही आध्यात्मिक ज्ञान का मूल-मंत्र है। आत्मा जब पुन: अपने स्वधर्म एवं स्वरूप में स्थित होकर अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा श्रेष्ठ कर्म करने लगती है तो श्रेष्ठ समाज का पुनर्निर्माण होता है।

मन का अंधकार दूर करो,
जग स्वत: ही प्रकाशित हो जाएगा ।

सर्वोच्च समाज सेवक

प्रत्येक संगठन में कोई-न-कोई विशेष व्यक्ति होता है जिस पर उस संगठन को सुचारु रूप से चलाने की ज़िम्मेवारी रहती है। एक परिवार में यह ज़िम्मेवारी घर के पिता की होती है कि वह अपने परिवार को हर प्रकार से सकुशल रखे तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य की उन्नति की ओर पूरा ध्यान दे। इसी प्रकार अपने राष्ट्र को गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने के श्रेष्ठ कार्य में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाला तथा अपने राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने वाला 'राष्ट्रपिता' कहलाता है। भारत देश में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ऐसा एक सशक्त उदाहरण थे जिन्होंने अंग्रेज़ों के साम्राज्य से भारत देश को स्वतंत्र कराने के लिए जनशक्ति का सहयोग लेकर कड़ा संघर्ष किया और कठोर यातनाएं सहन कीं। अपने प्राणों की बलि देने में भी संकोच नहीं किया। पूरा राष्ट्र ऐसे महान सेनानियों को याद करता है।

राष्ट्र हित को सम्मान देने के लिए तथा विभिन्न राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों में समरसता बनाए रखने के लिए `संयुक्त राष्ट्र संघ` कार्यरत है । निश्चित कार्यक्रम या आपद काल में इसके सदस्य आपस में मिलते रहते हैं । इस संस्था के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक `महासचिव` का चयन किया जाता है और इसकी महासभा के लिए तत्कालीन अध्यक्ष होता है । वे अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता तथा सर्व के सहयोग से अपने संगठन की मान–मर्यादा एवं भव्यता को बनाए रखने का भरसक प्रयास करते हैं ।

इसी प्रकार सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली सर्व आत्माओं के मार्गदर्शक परमपिता निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव हैं जो कल्पान्त के समय, जब सृष्टि पर अधर्म बढ़ जाता है, तब वह साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम द्वारा सहज ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर पुनः पतित से पावन बनाकर श्रेष्ठाचारी सतयुग में जाने का मार्ग दिखाते हैं एवं आत्माओं को पुनः आध्यात्मिक शक्ति प्रदान कर सशक्त करते हैं । अतः परमपिता परमात्मा ही सर्वोच्च समाज सेवक है जिनके द्वारा श्रेष्ठ समाज का पुनर्निर्माण होता है ।

याद रखें सहन वही कर सकता है जो शक्तिशाली होता है ।

सर्वोच्च समाज सेवक

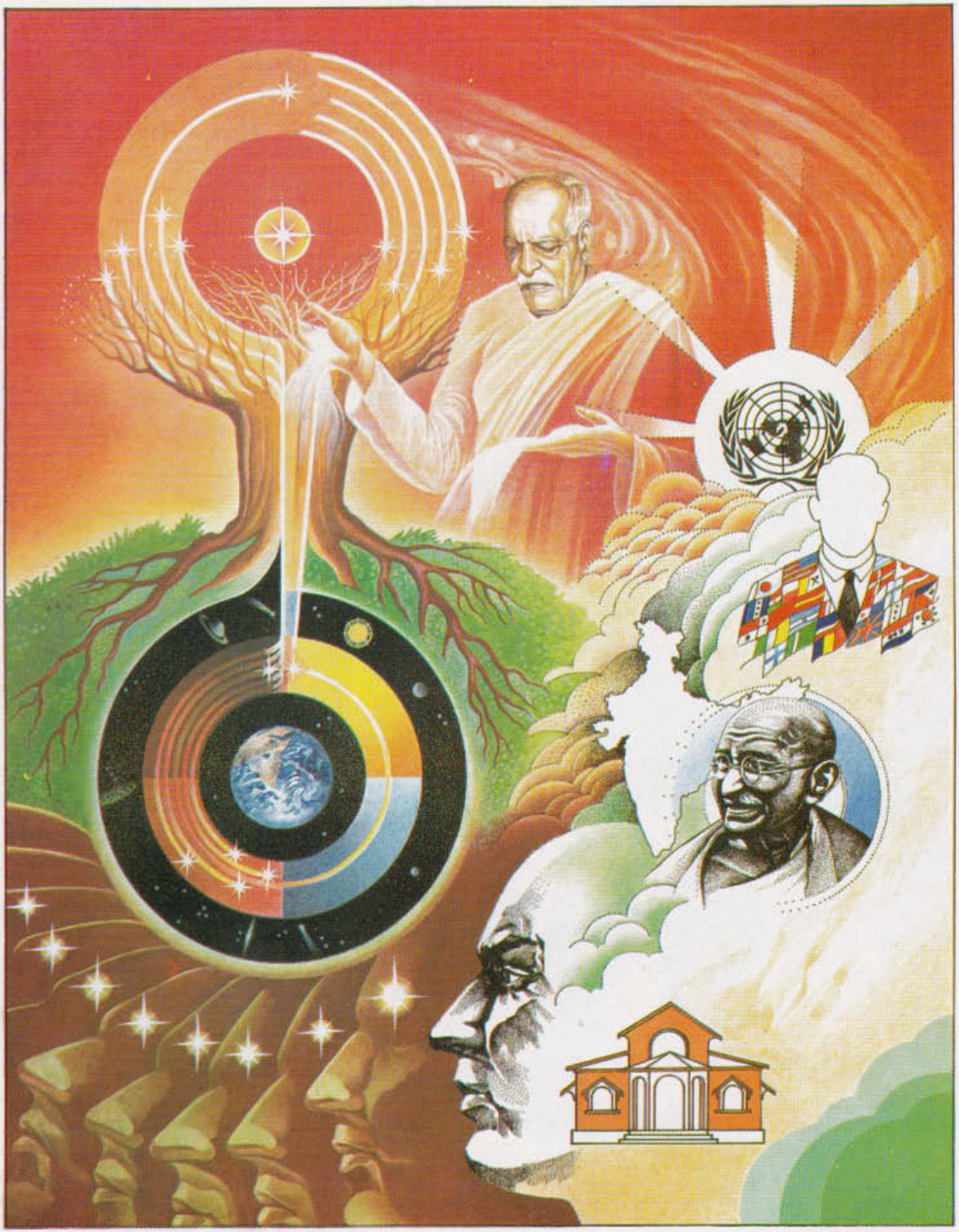

राजयोग द्वारा नवनिर्माण

राजयोग द्वारा नवनिर्माण

समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए समय प्रति समय पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद आदि विभिन्न व्यवस्थाओं ने जन्म लिया। कुछ समय तक अपना प्रभाव दिखाने के बाद सभी व्यवस्थाएं एक-के-पश्चात् एक मानव मन पर निष्प्रभाव हो गईं अथवा अपनी सतोगुणी स्थिति से तमोगुण की ओर अग्रसर होगईं ।

दिनोंदिन मानवीय जीवन में दिव्य गुणों का ह्रास हुआ और आसुरी वृत्तियों ने सामाजिक ढांचे को चकनाचूर कर दिया ।

अब समय की पुकार है कि एक ऐसी व्यवस्था का पुनर्निर्माण हो जिससे समाज पुनःश्रेष्ठाचारी बन जाए । एक ऐसे साम्राज्य की पुनर्स्थापना हो जहां सभी भेदभाव मिट जाएं और एक भाषा, एक धर्म, एक सम्पूर्ण अहिंसक एवं सर्व मर्यादाओं से सम्पन्न राज्य हो। ऐसी व्यवस्था के लिए समाज की मूल इकाई व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन लाना होगा। यह परिवर्तन राजयोग के अभ्यास से सम्भव है ।

राजयोग का अभ्यास अपने संकल्पों को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है। 'मैं एक पवित्र, शुद्धस्वरूप, चेतन आत्मा हूँ' – इस शुद्ध संकल्प रूपी बीज को यदि मर्यादाओं एवं धारणाओं, अर्थात् शुद्ध सात्त्विक अन्न, सतसंग, ब्रह्मचर्य की पालना और दिव्य गुणों की धारणा के जल से सींचा जाए तो मन पुनः एकाग्र अर्थात् एक ईश्वर में केन्द्रित होने लगता है। इस विधि से आत्मा का दिव्य सशक्तिकरण होता है। उसमें आसुरी वृत्तियों पर विजय प्राप्त करने की क्षमता पैदा होती है। पाप से मुक्त हो, आत्मा पुनः श्रेष्ठ कर्म की ओर अग्रसर होती है।

संसार में समस्याएं तो बढ़ती जाएंगी, मुझे समस्याओं से निपटने की अपनी शक्ति को बढ़ाना है।

मूल्य-निष्ठ समाज

समाज की मूल इकाई एक व्यक्ति है । जिस प्रकार एक छोटे से पत्थर के पानी में गिरने से तरंगें उस स्थान से चारों ओर फैलने लगती हैं और वे धीरे धीरे सारे तालाब को प्रभावित कर देती हैं, ठीक उसी प्रकार से एक व्यक्ति के मस्तिष्क से निकले शुद्ध विचारों के प्रकम्पन समाज के अन्य व्यक्तियों के मस्तिष्क को भी प्रभावित कर सकते हैं । यदि एक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का विकास होने लगे तो अवश्य ही उसे देखकर धीरे धीरे समाज के अन्य व्यक्ति भी उसका अनुकरण करने लगेंगे तथा समाज के दिव्यीकरण की एक नई विचारधारा सुदृढ़ होने लगेगी ।

मानव जीवन में आत्मिक बल, अर्थात् मनोबल का बहुत ही महत्व है । इस अदभुत् बल से ही विभिन्न शक्तियों का विकास होता है । सतोप्रधान निर्णय शक्ति के आधार पर ही व्यक्ति श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचता है । सहन करने की शक्ति जीवन को उज्ज्वल बनाती है तथा सामना करने की शक्ति व्यक्ति को निर्भय बनाती है । परख- शक्ति उसे हीरे और कंकड़ के भेद का बोध कराती है तो समेटने की शक्ति उसे कई उलझनों से बचा लेती है ।

शक्ति जब कर्म में आती है तो गुण का स्वरूप बन जाती है । विभिन्न दिव्य गुण- पवित्रता, प्रेम, शान्ति, आनन्द आदि गुण ही मानव जीवन का श्रृंगार हैं ।गुणविहीन व्यक्ति का जीवन पशु के समान है । गुणवान् समाज सेवक का जीवन एक ऐसे पेड़ के समान है जो पके हुए फलों से भरपूर हो । इसके साथ ही साथ यदि उसमें विनम्रता का गुण विशेष है तो वह समाज सेवक अहम् भाव से मुक्त अनेकों के अन्धकारपूर्ण जीवन में रोशनी ला सकता है । अतः समाज सेवक के जीवन में गुणों एवं शक्तियों का विकास अवश्य ही अनेकों के जीवन को दिव्य बनाने में सहायक सिद्ध होगा ।

हर श्रेष्ठ कार्य को साहस से करने वाला ही सम्मान पाता है ।

सर्व के लिए शुभावना, शुभकामना रखें, दुआओं का खज़ाना जमा करें।

मूल्य-निष्ठ समाज

वसुधैव कुटुम्भकम्

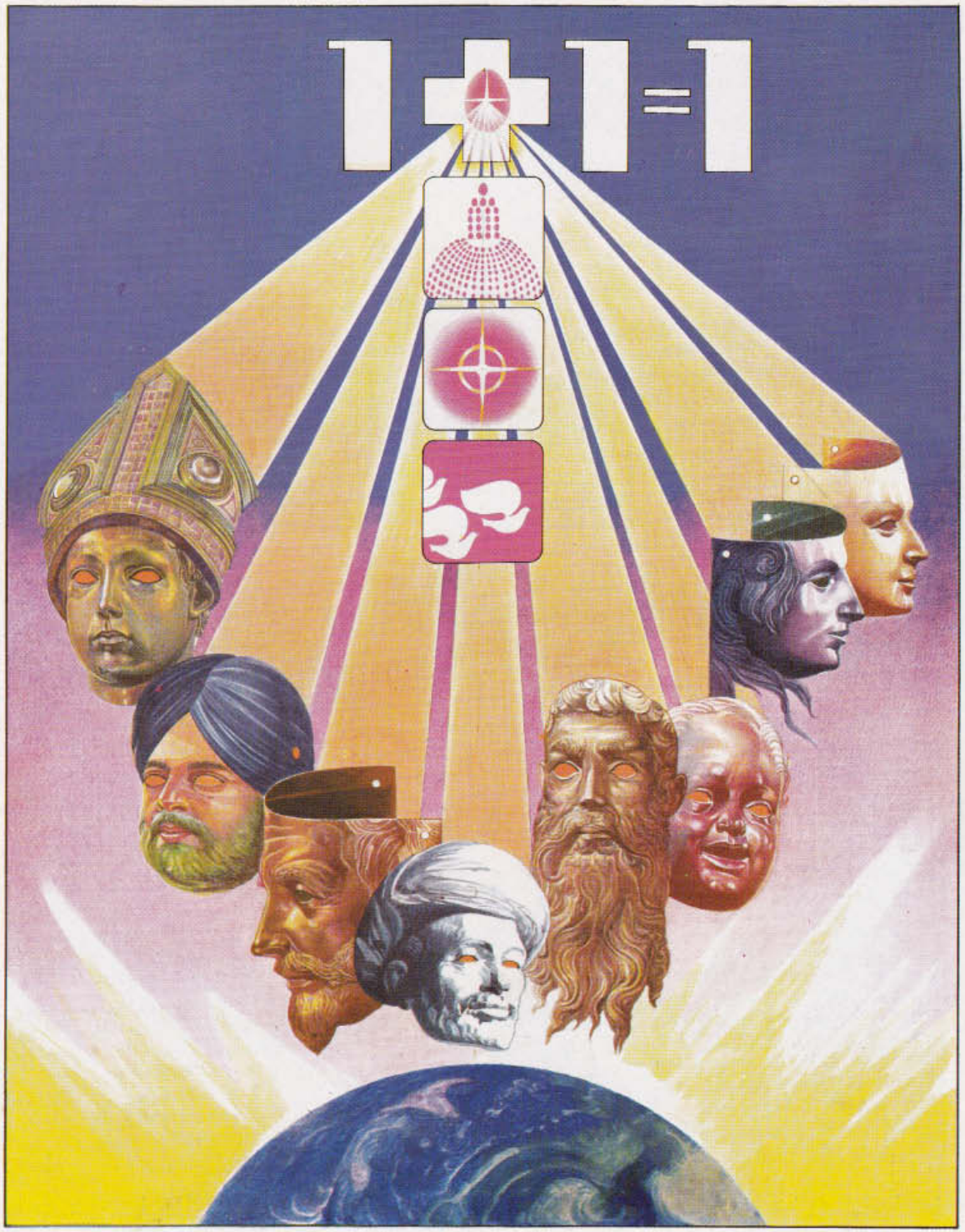

वसुधैव कुटुम्बकम्

हम देखते हैं एक नाटक में विभिन्न पार्टधारी विभिन्न वेशभूषा को धारण करके अनेक प्रकार के पार्ट बजाते हैं । कोई राजा बनता तो कोई मन्त्री का पार्ट बजाता है। एक साधु का वेश धारण करके भगवान की वन्दना करता है तो दूसरा डाकू बनकर अनेक धनवानों को लूट लेता है । कोई बहिन–माता का रूप बनाकर अपने बच्चे का लालन-पालन करती दिखाई देती तो दूसरी बहिन अपना नाच दिखाकर अनेकों का मनोरंजन करती है ।

नाटक के अन्त में उस नाटक का मुख्य पार्टधारी अथवा निदेशक मंच पर आता है और सभी पार्ट्धारियों का परिचय सभी को करवाते हुए सभी को अपने साथ ले जाता है । सभी पार्टधारी अपने पार्ट की ड्रेस उतार कर अपनी असली ड्रेस पहन कर अपने घर को लौट जाते । अब न कोई राजा है, न कोई मन्त्री । साधु और डाकू का पार्ट बजाने वाला भी अब न साधु रहा न डाकू है ।

इसी प्रकार से यह सृष्टि एक रंगमंच है। इस रंगमंच पर आत्माएँ पाँच तत्वों के शरीर धारण कर सतयुग के आरम्भ से लेकर कलियुग के अन्त तक भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती हैं। कलियुग के अन्त के समय सर्व आत्माओं के परमपिता निराकार ज्योतिस्वरूप त्रिमूर्ति शिव परमात्मा सृष्टि पर पुन: दैवी स्वराज्य की स्थापना करने के लिए अवतरित होते हैं। वे सर्व आत्माओं को उनकी यथार्थ पहचान देते हैं तथा अपने निज धाम परमधाम लौटने का निमन्त्रण भी देते हैं। तब सर्व आत्माएँ अपने दैहिक पार्ट को त्याग कर और अपने निज स्वरूप में स्थित होकर अपने पारलौकिक पिता के साथ अपने घर लौटती हैं। अब पुन: अपने घर लौटने का समय है। कुछ देर के विश्राम के बाद पुन: पार्ट बजाने के लिए सतयुगी श्रेष्ठाचारी दुनिया में आना होगा। अत: अब हमें देह और दैहिक सम्बन्धों को भुलाकर, आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर एक परमात्मा पिता को याद करना है ताकि आसुरी वृत्तियों से मुक्त होकर हम अपने निज धाम, परमधाम जाने के योग्य बन जाएँ।

अहंकार मनुश्य को अलंकारहीन बना देता है ।
अहम् और वहम् को छोड़ कर रहम दिल बनो ।

समाज सेवा प्रभाग का लक्ष्य एवं उद्देश्य

1. समाज में रहने वाले प्रत्येक भाई-बहन के मन में समाज सेवा के प्रति रुचि पैदा करना। समाज को अपना परिवार समझने से यह भावना पैदा होती है। अपने लिए जीया तो क्या जीया, जीवन उसी का है जो औरों के लिए जीए।

2. समाज में पुन: चारित्रिक मूल्यों की स्थापना करना। इसके लिए जन-जन को प्रेरित करना एवं सक्षम बनाना। वर्तमान समय यह समाज की सर्वोत्तम समाज सेवा है।

3. मादक पदार्थों के बढ़ते सेवन के दुष्परिणामों की जानकारी देकर व्यक्ति के जीवन को इससे मुक्ति दिलाना। व्यस्नों को छुड़ाने के साथ-साथ संस्कार परिवर्तन के लिए भी कार्य करना।

4. सामाजिक कुरीतियों एवं कुप्रथाओं जैसे कि दहेज प्रथा, बाल विवाह, अन्ध विश्वास, शकुनवाद, छुआछूत, रंग भेद, जातिवाद आदि के प्रति जागृति पैदा करना तथा इनके उन्मूलन के लिए शिक्षा एवं प्रेरणा देना।

5. आज मानव का जीवन अनेकानेक कारणों से तनावग्रस्त हो गया है। घर-घर में अशान्ति का वातावरण है। राजयोग की शिक्षा एवं अभ्यास के द्वारा व्यक्ति के जीवन को तनाव मुक्त एवं सुख-शान्ति सम्पन्न बनाना।

6. समाज सेवा के व्यापक एवं दीर्घकालीन स्वरूप को सामने रखते हुए एक ऐसे समाज के पुनर्निमाण के लिए कार्य करना जिससे श्रेष्ठ आचार, भ्रातृत्व भाव, सहयोग एवं स्नेह की भावना, नम्रता, स्वच्छता आदि दिव्य गणों की स्थापना हो।

7. ऐसे श्रेष्ठ कार्य के लिए अन्य समाज सेवी संस्थाओं का सहयोग लेना तथा उनके प्रतिनिधियों को समीप लाने के लिए सेमीनार, सम्मेलन, स्नेह-मिलन, संगोष्ठी आदि का आयोजन करना।

लेखक : ब्र.कु. अमीरचन्द, चण्डीगढ़ ;**चित्रकार:** ब्र.कु. किरण एवं भरत;
प्रकाशक :प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आबू पर्वत (राजस्थान)
मुद्रक: ओम् शान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)